जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

समाज के जाग्रत रहने पर ही तीर्थ सुरक्षित रहेंगे और जीवन्त तीर्थ जिनवाणी भी सुरक्षित रहेगी।

वर्ष : 24 | फरवरी (द्वितीय) 2002 | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अंक: 20 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

रत्नत्रय मण्डल विधान एवं वेदी शिलान्यास सम्पन्न

राजकोट : यहाँ 20 जनवरी से 27 जनवरी 2002 तक वेदी प्रतिष्ठा एवं रत्नत्रय मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, श्री बजुभाई अजमेरा राजकोट एवं श्री सुनीलजी शास्त्री के भी आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री राजकोट, पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भोपाल एवं पण्डित रत्नेशजी मेहता हिम्मतनगर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इन्द्रध्वज मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

इन्दौर : यहाँ 27 जनवरी 2002 से 3 फरवरी 2002 तक इन्द्रध्वज मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित विमलकुमारजी झांझरी उज्जैन एवं पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दोपहर में पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा स्याद्वाद-अनेकान्त विषय पर कक्षा चलाई गई। सायंकाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने मोक्षमार्गप्रकाशक पर कक्षा चलाई ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित रत्नेशजी मेहता हिम्मतनगर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

कल्पद्रुम विधान सानन्द सम्पन्न

नागपुर : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जिनमंदिर, नेहरू पुतला इतवारी में मंदिर के दसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 13 से 20 जनवरी 2002 तक कल्पद्रुममण्डल विधान पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में प्रतिष्ठाचार्य पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवर द्वारा सम्पन्न कराया गया।

इस अवसर पर पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री सिवनी के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त विधान में उपस्थित पण्डित राजमलजी पवैया भोपाल ने अपनी रचनाओं से जनसमूह को आनंदित किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा का विशेष योगदान रहा। विधान का आयोजन मोदी परिवार द्वारा किया गया।

दिनांक 19 जनवरी को इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, तीनलोक मण्डल, पंचपरमेष्ठी, रत्नत्रय, 170 तीर्थंकर, 20 तीर्थंकर, शान्ति विधान आदि शताधिक आध्यात्मिक विधानों एवं भजनों के सफल रचनाकार श्री राजमलजी पवैया भोपाल का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर उन्हें श्री कुन्दकुन्द दिग. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर द्वारा प्रशस्ति-पत्र, शॉल, श्रीफल एवं लघुतत्त्वस्फोट ग्रन्थ भेंट किया गया।

रात्रि में अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के सदस्यों एवं पाठशाला के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृंखला में जीवन जीने की कला नाटक, ज्ञान निधि, क्या आगम क्या अध्यात्म सभी का लक्ष्य एक, चक्कर अध्यात्म नंबरों का, आध्यात्मिक भजन, इन्द्रसभा आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये । सम्पूर्ण आयोजन में 300 से अधिक साधर्मी बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया।

- स्वर्णलता जैन

नवीन कार्यकारिणी का गठन

मेरठ : यहाँ 21 जनवरी 2002 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नवीन कार्यकारिणी का गठन चुनाव अधिकारी श्री प्रमोदजी जैन एडवोकेट के सान्निध्य में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। नई कार्यकारिणी में श्री मुकेशचन्द जैन अध्यक्ष, श्री प्रद्युम्नकुमार जैन उपाध्यक्ष, श्री पवनकुमार जैन मंत्री, श्री आदेशकुमार जैन उपमंत्री, श्री सौरभकुमार जैन संयुक्तमंत्री, श्री पंकजकुमार जैन कोषाध्यक्ष तथा श्री शेखर जैन प्रचारमंत्री चुने गये।

शपथ ग्रहण समारोह 10 फरवरी 2002 को परमपूज्य आचार्यश्री 108 धर्मभूषणजी महाराज के पावन सान्निध्य में शकुन्तला भवन, सुभाष बाजार में आयोजित किया गया। फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अखिल बंसल ने नवीन कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। इस पावन प्रसंग पर महाराजश्री के मांगलिक प्रवचनों का धर्मलाभ प्राप्त हुआ। इस अवसर पर पश्चिम उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधियों का सम्मेलन श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ की अध्यक्षता एवं श्री अखिलजी बंसल के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। विभिन्न शाखाओं से आये प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी शाखाओं की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री पवन जैन एवं श्री अखिल बंसल ने भी सभा को संबोधित किया।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

– रतनचन्द भारिल्ल

साहित्य सृजन के मूल प्रेरणास्रोत होते हैं प्राकृतिक मनोहारी दृश्य, महापुरुषों के जीवन की विशिष्ट घटनायें एवं उनके सम्बन्ध में साहित्यकार के खट्टे-मीठे अनुभव; जिनके द्वारा साहित्यकार अपने प्रिय पाठकों को रसानुभूति के साथ-साथ कुछ लोकहित और आत्मकल्याणकारी सीख भी देना चाहता है।

इस बहुउद्देश्यीय प्रयोजन की पूर्ति के लिये कथा साहित्यसृजन में समर्थ जैनाचार्यों को उन 63 शलाका महापुरुषों के चरित्र अधिक प्रभावशाली लगे, जिन्होंने लोकहित एवं आत्मकल्याण के विशेष कार्य किये।

63 शलाका महापुरुषों में आते हैं – 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण और 9 बलभद्र। ये 63 शलाका पुरुष अपने-अपने युग में सम्यक् पुरुषार्थ करके असाधारण पराक्रम (साहस) द्वारा विविध प्रकार के अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करते हैं। जैन और जैनेतर पुराणों में इन सबका विस्तृत वर्णन है।

9 बलभद्रों में मर्यादापुरुषोत्तम भगवान राम और 9 नारायणों में लीलापुरुषोत्तम एवं युद्धवीर श्रीकृष्ण – वैदिक और श्रमण संस्कृतियों के पुराणों में सर्वाधिक चर्चित हैं। इन चरित्रों को साहित्यकारों ने क्षेत्र व काल की स्थितियों के अनुकूल अपनी-अपनी नैतिक व सैद्धान्तिक विचारधारा के अनुरूप अपनाया है।

भारतीय पुराण साहित्य के अध्ययन और धार्मिक संस्कृति के अवलोकन से ज्ञात होता है कि भारतीय जन-जीवन में सदैव वीरपूजा होती रही है। चाहे वह पूजा धर्मवीर, दानवीर के रूप में हो अथवा शूरवीर या युद्ध वीर के रूप में हो। जिन्होंने भी धर्म, समाज एवं राष्ट्र के हित में शक्ति से अधिक साहस के काम किये, अपना सर्वस्व समर्पण किया, वे तत्कालीन समय में सम्मान के पात्र तो हुये ही; आगे चलकर बहुत से तो देवी-देवताओं के रूप में आराध्य भी बन गये।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जब भूतपूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने आपातकाल लगाकर देश की अनुशासनहीनता पर नियंत्रण पाने का साहसी कदम उठाया, पराक्रमी प्रयत्न किया तो देश उन्हें सम्माननीय मानकर दुर्गादेवी के रूप में देखने लगा।

वर्तमान में अधिकांश जितने हिन्दू धर्म के आराध्य देवी-देवता हैं; यदि हम उनके इतिहास की खोज करें तो हम उन्हें भी किसी न किसी क्षेत्र में साहस के काम करनेवाले अपने समय के 'वीर' 'महावीर' के रूप में ही पायेंगे।

जैन पुराणों में विस्तार से 63 शलाका पुरुषों के चरित्र लिखे गये हैं। इन महापुरुषों के चरित्र आदर्श एवं प्रेरणादायक होने से क्षेत्र व काल की सीमाओं में सीमित न रहकर व्यापकरूप से लोकरुचि के विषय बन गये हैं। 24 तीर्थंकरों के सिवाय बलभद्र राम, नारायण कृष्ण, चक्रवर्ती भरत आदि इसीप्रकार के लोकमान्य महापुरुष हैं। जैन पुराणों में इन सबकी प्रधानता है। साहित्य में ये अधिकांश नायक के रूप में प्रस्तुत किए गये हैं।

जैनधर्म में तो आराध्य के रूप में या अर्चना-पूजा करने के रूप में पूज्यता का मुख्य आधार वीतरागता एवं सर्वज्ञता को माना गया है; अत: जो गृहस्थपना छोड़कर मुनिधर्म अंगीकार कर निजस्वभाव की साधना करके मोहादि कर्मों का नाश कर केवलज्ञानी अरहंत एवं सिद्ध पद को प्राप्त हो गये, वे ही देवरूप में आराध्य माने गये। शेष सबको पुराणपुरुष के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया गया तथा उनके आदर्श चरित्रों से भविष्य सबक सीखे; एतदर्थ प्रथमानुयोग के रूप में उनके आदर्श चरित्र लिखे गये।

प्रस्तुत हरिवंशपुराण में हरिवंश के माध्यम से पाण्डव एवं कौरवों के चरित्रों का प्रमुखरूप से वर्णन है, ये चरित्र हमें नि:सन्देह प्रेरणा प्रदान करेंगे।

जैन हरिवंशपुराण में प्रतिपादित विश्वव्यवस्था छहद्रव्यों के रूप में अनादि-अनंत एवं स्व-संचालित है। इसे किसी ने बनाया नहीं है। यह कभी नष्ट नहीं होती मात्र इन द्रव्यों की अवस्थायें बदलती हैं, इनका उत्पाद-व्यय होकर भी ये ध्रुव रहते हैं। ये जाति की अपेक्षा 6 द्रव्य हैं और संख्या की अपेक्षा देखें तो जीव अनन्त हैं, पुद्गल अनन्तानन्त हैं, धर्मद्रव्य, अधर्म द्रव्य एवं आकाशद्रव्य एक-एक हैं और कालद्रव्य असंख्यात हैं। इनमें जीव चेतन है, शेष पाँच अचेतन हैं। पुद्गल मूर्तिक है, शेष पाँच अमूर्तिक हैं। काल एक प्रदेशी है, शेष पाँच बहुप्रदेशी हैं, इन पाँचों को बहुप्रदेशी होने से अस्तिकाय भी कहते हैं।

इनके कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण के रूप में स्वतंत्र षट्कारक होते हैं, जिनके द्वारा इनका स्वतंत्र परिणमन होता है, इस परिणमन को ही पर्याय, हालत, दशा या अवस्था कहते हैं।

ऐसे वस्तुस्वरूप के प्रतिपादन के साथ-साथ हरिवंश की एक शाखा यादवकुल और उसमें उत्पन्न हुए दो शलाका पुरुषों का चरित्र विशेषरूप से वर्णित हुआ है। एक 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ और दूसरे 9वें नारायण श्रीकृष्ण। ये दोनों चेचेरे भाई थे। इनमें एक अपने विवाह के अवसर पर वैराग्य का निमित्त पाकर अनब्याहे ही सन्यास लेकर तपश्चरण हेतु गिरनार की गुफाओं में चले गये और दूसरे ने कौरव-पाण्डव युद्ध में बल-कौशल दिखलाया। एक ने निवृत्ति का मार्ग अपनाकर आध्यात्मिक उत्कर्ष का आदर्श उपस्थित किया और दूसरे ने प्रवृत्तिमार्ग के द्वारा भौतिक लीला के माध्यम से जनमंगल के कार्य किये। **(क्रमश:)**

वह तो एकसमान ही था

वीतरागी शान्तभावरूप परिणमित आत्मा कैसा होता है, उसे प्रत्यक्ष देखकर, उन्हें आत्मा के शान्तस्वभाव की प्रतीति हो जाती है। अहा ! सर्वज्ञ तीर्थंकर जिसके नायक, गणधर जिसके मंत्री और देव जिसके द्वार पाल हों उस दरबार का क्या कहना ! भगवान ऋषभदेव की धर्मसभा (समवसरण) बारह योजन व्यास की थी और भगवान महावीर की 1 योजन व्यास की थी; परन्तु दोनों धर्म सभाओं में जिस चैतन्य तत्त्व का प्रतिपादन किया गया तथा जो मोक्षमार्ग बतलाया गया, वह तो एकसमान ही था। **– चौबीस तीर्थंकर महापुराण, पृष्ठ – 492**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(94 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

जिसप्रकार स्फटिक की प्रतिमा के चारों ओर धूल होने पर भी वह धूल स्फटिक में गिरती नहीं है; उसीप्रकार शरीर और कर्मोरूपी धूल के बीच में ज्ञानमूर्ति आत्मा रहने पर भी आत्मा में वे कहीं प्रविष्ट नहीं हो गये हैं। यदि ऐसे आत्मा को जानकर अन्तर में उसे देखने का प्रयत्न करे तो वह दिखाई देता है। स्फटिक की प्रतिमा तो आँख से दिखाई देती है, हाथ से स्पर्श की जाती है – इसप्रकार वह इन्द्रियों द्वारा ज्ञात होती है; परन्तु आत्मा ज्ञानानन्द मूर्ति है, वह इन्द्रियों द्वारा दिखता नहीं है; परन्तु अतीन्द्रिय ज्ञान–दर्शनरूपी चक्षु से ज्ञात होता है। शरीर और आत्मा को एक माने तो शरीर से भिन्न आत्मा नहीं दिखता है और धर्म नहीं होता है। देखनेवाला तो आत्मा है; परन्तु यदि वह इन्द्रियों द्वारा देखता है तो बाहर के जड़पदार्थ ही दिखते हैं, आत्मा नहीं दिखता है। अन्तर में ज्ञानचक्षु से अर्थात् भावश्रुत से आत्मा को देखने का प्रयत्न करे तो वह दिखाई देता है और ऐसे आत्मा को देखना और अनुभवना ही अभेदभक्ति है। उसके द्वारा ही आत्मा में से आवरण का क्षय होकर सिद्धसुख प्राप्त होता है – इसप्रकार चकवर्ती भरत महाराज अपनी रानियों को समझाते हैं।

स्फटिक तो जड़ है और यह चैतन्यमूर्ति आत्मा उससे बिलकुल विलक्षण है, वह बाहर की आँख से दिखता नहीं है; परन्तु ज्ञानचक्षु से दिखता है। निर्मल आकाश की तरह आत्मा को ज्ञान की मूर्ति समझकर अन्तर में उसका ध्यान करो। संसार का मोह बहुत खराब है, पर पदार्थो के ऊपर होनेवाले मोह के कारण ही आत्मा परमात्मा की अभेदभक्ति से भ्रष्ट हो गया है; अत: सबसे पहले परवस्तु की ममतारूप आशा के बन्धन को छोड़ो, परवस्तु की तीव्र आसक्ति छोड़ने के बाद एकान्तवास में जाकर अन्तर में चैतन्यमूर्ति आत्मा का ध्यान करो – ऐसा करने से अभेदभक्ति होगी और मुक्ति होगी। इसप्रकार भरतजी ने अपनी रानियों को उत्तर दिया।

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान के पुत्र भरत चक्रवर्ती संसार में रहने पर भी धर्मात्मा थे। उनकी 96 हजार रानियाँ थी। वे रानियाँ भरतजी से धर्म के प्रश्न पूछती हैं और भरतजी उनका जवाब देते हैं।

रानी ने प्रश्न पूछा कि आत्मा का अनुभव किसप्रकार होता है ?

उसे भरतजी उत्तर देते हैं कि आत्मा शरीर से भिन्न है, आत्मा को भूलकर परपदार्थों में ममता करके जो तीव्र लोभ करता है, वह लोभ बुरा है। उस लोभ को मन्द करके एकान्त में जाकर आत्मा का चिन्तन करना चाहिये।

पहले जगत की तीव्र ममता घटाकर सत्समागम में आत्मा का स्वरूप सुनो बाद में एकान्त में जाकर अन्तर में उसका ध्यान करने का प्रयत्न करना चाहिये। अनन्तकाल से आत्मा को जानने का प्रयत्न किया नहीं है; अत: एक ही दिन के प्रयत्न से वह नहीं जाना जायेगा; अत: उसके लिये तीव्र प्रयत्नपूर्वक बारंबार अभ्यास करना चाहिये। बाहर में पैसा इत्यादि की प्राप्ति होने में आत्मा का पुरुषार्थ नहीं है; परन्तु आत्मा का स्वरूप क्या है, उसे पहिचानने में आत्मा का पुरुषार्थ है। वास्तविक जिज्ञासा से अभ्यास करते रहने पर आत्मा का अनुभव होता है।

आगे जाकर रानी पूछती है कि आत्मा के अनुभव के लिये कुछ पुण्य करने को कहो न ? क्या भगवान की भक्ति, दान इत्यादि करते–करते आत्मा का अनुभव नहीं होता है ?

तब भरतजी उत्तर देते हैं कि जिसप्रकार दर्पण के ऊपर चंदन का लेप करो तो वह भी दर्पण को आवरण का ही कारण है; उसीप्रकार आत्मा में शुभराग से भी आवरण होता है। प्रारंभिकदशा में भेदभक्ति का शुभराग होता है; परन्तु उस शुभ तथा अशुभ दोनों से रहित आत्मा का स्वरूप है, उसकी पहिचान का निरंतर प्रयत्न करना चाहिये।

भरतजी अपनी स्त्री से कहते हैं कि हे सुखकांक्षिणी ! भेदभक्ति से पुण्य होता है और उससे स्वर्गादि पद तो मिलते हैं; परन्तु आत्मा का सुख नहीं मिलता है। रागरहित ज्ञानस्वरूपी आत्मा की श्रद्धा–ज्ञान करके उसके ध्यान में एकाग्र होना अभेदभक्ति है और वह अभेदभक्ति ही मोक्षसुख का कारण है। अभेदभक्ति ही मुक्ति का कारण है और भेदभक्ति बंध का करण है – यह बात भव्य सज्जनपुरुष तो उल्लास से स्वीकार करते हैं; परन्तु जिसकी होनहार खराब है – ऐसा अभव्यजीव उसे नहीं स्वीकारता है।

अहो ! यह देह तो जड़ और नाशवान है और मैं चैतन्यमूर्ति अविनाशी हूँ – इसप्रकार आत्मा की पहिचान और ध्यान की रुचि भव्यजीव को ही होती है, अभव्यजीव को आत्मा के ध्यान की रुचि नहीं होती है। देखो ! संसार में रहनेवाले धर्मात्मा पति–पत्नी भी ऐसी धर्मचर्चा बारंबार करते हैं।

विद्यामणि नाम की स्त्री भक्तिपूर्वक भरतजी से पूछती है कि हे स्वामी ! शरीर और राग से भिन्न आत्मस्वभाव का ज्ञान करनेरूप अभेदभक्ति क्या पुरुषों को ही हो सकती है अथवा हम स्त्रियों को भी होती है ?

तब भरत महाराज उत्तर देते हैं कि उस अभेदभक्ति के दो प्रकार हैं – 1.शुक्लध्यान 2. धर्मध्यान । ये दोनों कहने में तो भिन्न लगते हैं; परंतु दोनों का अवलम्बनरूप आत्मा एक ही है; अत: वे एक ही जाति के हैं। आत्मस्वभाव के भान द्वारा धर्मध्यान स्त्री को भी हो सकता है; परन्तु उसे शुक्लध्यान नहीं हो सकता है; क्योंकि धर्मध्यान से शुक्लध्यान विशेष निर्मल है।

स्त्री अथवा पुरुष – इन दोनों के आत्मा तो एक ही प्रकार के हैं, बाहर की देह में अन्तर होने पर अन्दर के आत्मा में अन्तर नहीं पड़ता है। ध्यान का अवलम्बन तो देह से भिन्न आत्मा है, शरीर के अवलम्बन से ध्यान नहीं होता है। स्त्री को भी आत्मा के अवलम्बन से धर्मध्यान होता है। आत्मा शरीर से भिन्न है और अन्दर में पुण्य–पाप की वृत्ति से भी भिन्न है। सभी जीवों को धर्म के लिये तो आत्मा का ही अवलम्बन है – ऐसे आत्मा का अवलम्बन करके ध्यान करे तो स्त्री को भी आत्मा का अनुभव होता है। आत्मा आनंदस्वरूप है, उसकी पहिचान करके उसके ध्यान में एकाग्र होने पर, पर का विचार छूट जाता है। इसी का नाम सच्चा ध्यान है और पर के विचार में एकाग्र होकर आनंदमूर्ति आत्मा को भूल जाना तो झूठा ध्यान है। **(क्रमश:)**

पधारिये .. !

!! श्री पाश

भारत देश की राजधानी दिल्ली

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबि

(मंगलवार, दिनांक 26 फरवरी से र

कार्यक्रम स्थल : हनुमान वाटिका, ग्रीनवे पि

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि देश की हृदयस्थली दिल्ली में श्री 10
आचार्य श्री 108 धर्मभूषणजी महाराज एवं मुनिश्री 108 सम्यक्त्वभूषणजी महाराज के पावन स
भाववाही मनोज्ञ धवल पाषाण एवं धातु की प्रतिमायें पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान
अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निज कल्याणार्थ सपरिवार तथा इ

पावन आशीर्वाद

पूज्य आचार्यश्री 108 धर्मभूषणजी महाराज

परम सान्निध्य

मुनिश्री 108 सम्यक्त्वभूषणजी महाराज

प्रतिष्ठाचार्य

ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद

सह-प्रतिष्ठाचार्य

पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, बेलगांव

निर्देशक

पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, बिजौलिया
पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री, लोनी

भगवान के माता-पिता

श्री जीवेन्द्र जैन
श्रीमती उमा जैन, गाजियाबाद

यज्ञनायक

श्री राकेश जैन
दिलशाद गार्डन

सौधर्म इन्द्र

श्री विजयपाल जैन
भोलानाथनगर (कवालवाले)

कुबेर

श्री वीरेन्द्र जैन
दिलशाद गार्डन

अध्यक्ष

कुमकुमेन्द्र जैन
(खेकड़ावाले, दिल्ली)

उपाध्यक्ष

रमेशचन्द जैन, लक्ष्मणदास जैन,
चतरसैन जैन, श्रीमती सुधा जैन

संयोजक

अशोक जैन शास्त्री
नरेशचन्द जैन, बाबूलाल जैन

सम्पर्क-सूत्र : *कुमकुमेन्द्र जैन (के.के. जैन) फोन (011) 2283157, मोबाइल - 98100

विनीत : श्री 1008 पार्श्वनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महो

नोट - कृपया इस विज्ञापन को जहाँ से स

र्श्वनाथाय नमः !!

अपूर्व धर्मलाभ लीजिये !!!

महानगर के दिलशाद गार्डन में

बेम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, दिनांक 3 मार्च 2002 तक)

ब्लिक स्कूल के सामने, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन पूज्य
ान्निध्य में किया जा रहा है। इस अवसर पर वीतरागी-सर्वज्ञ जिनेन्द्र भगवंतों की अन्तर्मुखी
की जायेंगी। महोत्सव के विधि-नायक श्री1008 भगवान पार्श्वनाथ होंगे। आपसे विनम्र
ष्ट मित्रों सहित पधारकर एवं धर्मलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर

पण्डित प्रकाशचन्दजी 'हितैषी', दिल्ली

मांगलिक कार्यक्रम

26 फरवरी 2002 – जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध्वजारोहण, प्रतिष्ठामंडप का उद्घाटन, इन्द्रप्रतिष्ठा विधि, यागमण्डल विधान, गर्भकल्याणक के 6 माह पूर्व इन्द्रसभा व राजसभा।

27 फरवरी 2002 – **गर्भकल्याणक** – 16 स्वप्न-फल, माता व अष्ट देवियों की मार्मिक तत्त्वचर्चा, जिनमंदिर में वेदी-कलश-ध्वजशुद्धि, शोभायात्रा, शास्त्रप्रवचन।

28 फरवरी 2002 – **जन्मकल्याणक** – बालक पार्श्वकुमार के जन्म-कल्याणक पर इन्द्रों व राजाओं द्वारा आनंदवर्द्धक कार्यक्रम, 1008 स्वर्ण-रत्नमयी कलशों से जन्म-अभिषेक व पालना-झूलन, इन्द्रसभा व राजसभा।

1 मार्च 2002 – **तपकल्याणक** – लौकान्तिक देवों द्वारा राजकुमार पार्श्व के वैराग्य की अनुमोदना, मुनि-दीक्षाविधि।

2 मार्च 2002 – **ज्ञानकल्याणक** – मुनिराज पार्श्वनाथ को आहार दान विधि, केवलज्ञान प्राप्ति, प्राणप्रतिष्ठा विधि, समवशरण रचना एवं दिव्यध्वनि प्रसारण।

3 मार्च 2002 – **मोक्षकल्याणक** – सम्मेदशिखर की रचना, भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाणप्राप्ति, जिनेन्द्रदेव विराजमान।

तीर्थंकर का जन्माभिषेक कर निम्न पुण्यलाभ अवश्य लेवें

त्न कलश	21000/-	**भावना कलश**	1100/-
ड़ित कलश	11000/-	**पार्श्व कलश**	501 /-
कलश	5100/-	**घटयात्रा (वेदी शुद्धि हेतु)**	
कलश	2500/-	**वंदना कलश**	501/-

महामंत्री
जे. के. जैन
दिल्ली

मंत्री
वीरेन्द्रकुमार जैन,
प्रकाशचन्द जैन, राजेन्द्र जैन

ाध्यक्ष
के. जैन
दिल्ली

094987 ✻जे.के. जैन, फोन - 2286298

त्सव समिति, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95

ब देख सकें, ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें।

समयसार का सार 41

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

गतांक से आगे

जन्म से ही महावीर अतुल्य बल के धनी थे, पर जब उन्हें केवलज्ञान हुआ, तब वे अनंतवीर्य के धनी हुए। अरे भाई ! जब तो उनमें कोई कमी नहीं थी, फिर भी 72 वर्ष की उम्र में उनका मोक्ष जाना निश्चित था तो वे 72 वर्ष की उम्र में ही मोक्ष गए। वे उसमें परिवर्तन नहीं कर सकते थे। जब उन्होंने दीक्षा ली थी, तब सिद्ध बनने के लिए ही दीक्षा ली थी, लेकिन छद्मस्थ, अरहंत इत्यादि अवस्थाएँ होना सिद्धावस्था के समान निश्चित था। जब उनकी इच्छा मोक्ष जाने की थी तो वे सीधे मोक्ष चले जाते, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सकते थे।

जैसा निश्चित है, उससे एक क्षणपूर्व भी वे इस जगत को छोड़ ही नहीं सकते थे। वे जड़ की क्रिया को कर ही नहीं सकते हैं।

कोई किसी के एक भाव को भी नहीं पलट सकता। महावीर को 12 वर्ष क्यों लगे केवलज्ञान होने में ? 12 वर्ष तक शुभभाव में रहे। उनकी दृष्टि में शुभभाव तो उसी दिन हेय हो गया था, जब उन्हें सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई थी; लेकिन वे 12 वर्षतक लगातार अन्तर्मुहूर्त आत्मा में नहीं रह पाए। आदिनाथ भी एक हजार वर्ष तक लगातार अन्तर्मुहूर्त आत्मा में नहीं रह पाए।

एक शुभभाव पलटने की ताकत नहीं थी। उनमें अशुभभाव को भी पलटने की ताकत नहीं थी। भरत चक्रवर्ती के पास छह खण्ड की विभूति थी, उनके कई विवाह हुए थे। क्या वे नहीं जानते थे कि ये सब अशुभभाव हैं, पापभाव हैं ? उनको सम्यग्ज्ञान होते ही यह ज्ञान हो गया था कि मैं इनका कुछ भी नहीं कर सकता हूँ।

उनको तो कुछ करने का भाव ही नहीं था। मैं कर सकता हूँ या नहीं कर सकता हूँ ? – यह प्रश्न तब उपस्थित होता है, जब कुछ करने का भाव हो। जब कुछ करने का ही भाव ही नहीं है तो मैं कर सकता हूँ या नहीं कर सकता हूँ ? – यह प्रश्न उपस्थित करना ही निरर्थक है।

जिनके पास एक करोड़ रुपए हैं, उन्हें एक करोड़ रुपए देने का भाव आता है। हवा में कल्पना नहीं होती। हवा में कल्पना करनेवाला आधा पागल ही होगा। होते तो देता, इसका मतलब देने का भाव नहीं है। इसप्रकार का देना तो –

अल्ला मियां बड़े सयाने, पहले ही काट लिये दो आने।

जैसी स्थिति है। एक अल्लाह का भक्त बहुत भूखा था, उसने अल्लाह से कहा – ओ मेरे मालिक ! यदि मुझे एक रुपया मिल जावे तो उसमें से दो आने का परसाद मैं तुम्हें चढ़ाऊँगा।

उसे एक रुपए का नोट मिल भी गया, पर थोड़ा सा फटा हुआ था। वह उस नोट को भुनाने बाजार में ले गया। फटा हुआ नोट था, इसलिए किसी ने उसे पूरे पैसे दिए ही नहीं; अतः उसे उस नोट के 14 आने ही मिल पाए।

अब वह कहता है कि 'खुदा बहुत होशियार है, उसने पहले ही दो आने काट लिए।

इसीप्रकार सोचनेवाला कहता है कि मेरे पास एक करोड़ होते तो दे देता। इसके पास एक अरब भी आ जाय तब भी यह कुछ भी देनेवाला नहीं है। मुफ्त में पुण्य बाँधना चाहता है।

यह जितना है, उसमें से ही देने की बात नहीं सोचता। यदि देना है तो जितना है उसमें से देने की सोचना चाहिए।

यदि इसके पास एक करोड़ रुपए हैं और हम उससे पूछें कि कितने का दान दोगे ? तो यह कहेगा कि जितने का देने का भाव आएगा, उतने का दान दे देंगे, इसमें पूछना क्या करना ?

सभी अपने शिक्षाकाल में इसप्रकार के कई निबंध लिखते हैं कि जैसे मैं प्रधानमंत्री होता तो क्या करता .... ! 8 वर्ष से पहले तक अटलबिहारी वाजपेयी भी न जाने कितनी बार कहते थे कि यदि मैं प्रधानमंत्री होता तो ऐसा करता। हमारी पार्टी सत्ता में आ जाय तो हम यह-यह करेंगे। अब जबकि प्रधानमंत्री बन गए हैं तो जैसा-जैसा कहा था वैसा होता नहीं। उनकी ही पार्टी के लोग उनसे कहते हैं कि प्रधानमंत्री हो गए तो स्वदेशी गायब हो गया। स्वदेशी गायब हो गया और विदेशी आ गया। राममंदिर उनके ऐजेन्डे में ही नहीं रहा।

अरे भाई ! ज्ञानी कल्पनालोक में विचरण नहीं करते हैं। वे तो कहते हैं – द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार जिस द्रव्य का जैसा परिणमन होगा, उस समय हम उसे वैसा जान लेंगे। पुण्य और पाप एक से ही हैं। ये भूमिकानुसार होते हैं। जैसे भूमिकानुसार होते हैं, वैसे हमें स्वीकार हैं। स्वीकार है अर्थात् हम इसमें कोई मीन-मेख नहीं निकालेंगे। हम पुण्य-पाप के न कर्त्ता हैं, न भोक्ता हैं।

पुण्य-पाप का कर्त्ता-भोक्ता ज्ञानी कभी नहीं बनता है, उसकी दृष्टि में दोनों समान हैं। दोनों ही कर्मरूपी शूद्रा के पुत्र हैं, धर्मजाति के ही हैं, धर्मजाति के नहीं हैं। यही पुण्य-पापएकत्वाधिकार का मुख्य कथ्य है। आचार्य कुन्दकुन्द 150वीं गाथा में लिखते हैं –

रत्तो बन्धदि कम्मं, मुच्चदि जीवो विरागसंपत्तो।

एसो जिणोवदेसो, तम्हा कम्मेसु मा रज्ज॥

रागी जीव कर्म बाँधता है और वैराग्य को प्राप्त जीव कर्म से छूटता है – यह जिनेन्द्र भगवान का उपदेश है, इसलिए कर्मों में, शुभाशुभ कर्मों में राग मत करो।

शुभरागी और अशुभरागी दोनों ही कर्म बाँधते हैं और जो विराग से सम्पन्न हैं अर्थात् जो शुभराग और अशुभराग से रहित हैं, वे कर्मों से मुक्त होते हैं, वीतरागदशा को प्राप्त होते हैं। ऐसा जिनेन्द्रदेव का उपदेश है।

इसलिए चाहे शुभकर्म हों, चाहे अशुभकर्म हों, किसी में भी रागभाव मत करो। इन्हें सहजभाव से जानो, देखो।

फरवरी (द्वितीय) 2002

...करनेवाले नहीं हो तो इन्हें रोकनेवाले भी कौन होते हो ? ...भी तो एकप्रकार से करना ही है।

अरे भाई ! कुछ मत करो, जो हो रहा है, उसे जान लो। ...है वैसे जान लो। शुभ हो तो शुभ जान लो, अशुभ हो तो ...जान लो। जो है उसे जान लो। यदि ऐसा हुआ तो ...स्वतरूप से अशुभभाव धीरे-धीरे कम होते जाएँगे और शुभभाव ...धीरे बढ़ते जाएँगे। कुछ समय पश्चात् शुभभाव भी धीरे-धीरे ...होते जाएँगे। इसप्रकार शनै:-शनै: पूर्ण शुद्धता को प्राप्त हो ...हम।

तत्काल कुछ भी होनेवाला नहीं है; सब क्रमिक विकास से ...है। अतः हे जीव ! तू निर्णय कर कि दोनों कर्म समान हैं।

पुण्य-पाप एकत्व अधिकार का मूल उद्देश्य पुण्य-पाप की ...चर्चा करना नहीं है; अपितु यह बताना है कि दोनों कर्म ...हैं। यह पुण्य-पाप के एकत्व का द्वार है। ज्ञानी के जीवन ...दोनों ही होते हैं और जब होते हैं, तब वह उन्हें जान लेता ...ऐसी परिणति हमारे जीवन में प्रगट हो – यही पुण्य-पाप ...अधिकार का मूल उद्देश्य है।

दसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम में जिस आत्मतत्त्व का प्रतिपादन ...गया है, उस आत्मतत्त्व को समझने के लिए निश्चय-व्यवहार, ...निमित्तोपादान और पुण्य-पाप जैसे विषयों को समझना अत्यंत ...श्यक है।

समयसार में उस त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा का ही ...न है, जिसके दर्शन का नाम सम्यग्दर्शन है, जिसके ज्ञान का ...सम्यग्ज्ञान है और जिसके ध्यान को सम्यक्चारित्र कहते हैं।

उस भगवान आत्मा को ही समझने के लिए उक्त सिद्धान्तों ...समझने की अत्यंत आवश्यकता होती है। यही कारण है ...सार जैसे शुद्धात्मा के प्रतिपादक ग्रन्थ में भी इनका भरपूर ...लेषण है।

जीवाजीवाधिकार में पाँच गाथाओं के माध्यम से एवं स्थान-स्थान ...निश्चय-व्यवहार की चर्चा समयसार में की गई है।

कर्त्ताकर्माधिकार में निमित्तोपादान की चर्चा मुख्यरूप से ...ती है; क्योंकि उपादान अर्थात् अपनी वस्तु और निमित्त ...र्थात् पर – 'उपादान निज गुण जहाँ, तहाँ निमित्त पर होय' ...आचार्य यह कहते हैं कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता- ...नहीं है तो इसका अर्थ यही होता है कि उपादान कर्त्ता है ...निमित्त कर्त्ता नहीं है।

निमित्तोपादान और निश्चय-व्यवहार – ये दोनों विषय ...गुथे हुये हैं। निमित्त की अपेक्षा से जितना भी कथन ...है, वह सब व्यवहारनय का होता है अर्थात् औपचारिक ...है। उपादान की अपेक्षा जितना भी कथन किया जाता है, ...निश्चयनय का होता है, वास्तविक होता है; इसलिए निश्चय-व्यवहार और निमित्तोपादान आपस में जुड़े हुए हैं।

आत्मा का स्वभाव ज्ञाता-द्रष्टा है, कर्त्ता-धर्त्ता नहीं – यह तो परसापेक्ष कथन है। स्वयं का तो आत्मा कर्त्ता-भोक्ता भी है एवं ज्ञाता-द्रष्टा भी है, लेकिन पर की अपेक्षा से यह आत्मा मात्र ज्ञाता-द्रष्टा, जानने-देखनेवाला तत्त्व है; पर का कर्त्ता-धर्त्ता नहीं है।

पूर्व में विवेचित अमृतचन्द्राचार्य के कलश में यह स्पष्ट कहा है कि जो ज्ञाता होता है, वह कर्त्ता नहीं होता है और जो कर्त्ता होता है, वह ज्ञाता नहीं होता है; क्योंकि ये दोनों क्रियायें भिन्न-भिन्न हैं।

किसी कम्पनी ने किसी गाँव में अपना एक ऑफिस खोला। उस ऑफिस के लिए एक ऑफीसर, एक क्लर्क और एक चपरासी रखना अनिवार्य था। अतः कम्पनी ने योग्य अभ्यर्थियों को इन्टरव्यू के लिए बुलाया। सबसे पहले ऑफीसर का चयन कर लिया गया। उस ऑफीसर से यह कहा गया कि अब चपरासी और क्लर्क के चयन में आप भी सहयोग करना; क्योंकि इनसे काम तो आपको ही लेना है।

उस चयनित ऑफीसर ने कम्पनीवालों से पूछा कि 'क्लर्क का काम क्या रहेगा ?' कम्पनीवालों ने कहा – 'ये लेखा-जोखा देखेगा, ये आपके पत्र लिखेगा, आप जो काम कहेंगे वह करेगा।'

तब ऑफीसर बोला – 'ये कितना सा काम है, ये तो मैं ही कर लूँगा। दो-चार पत्र लिखने पड़ेंगे तो उन्हें मैं ही लिख दूँगा।'

इस पर कम्पनीवालों ने सोचा कि अभी चार-छः माह काम का अधिक भार नहीं रहेगा, अतः क्लर्क की नियुक्ति चार-छः माह बाद कर लेंगे।

इसीप्रकार का प्रश्न जब चपरासी के बारे में किया गया तो कम्पनीवालों ने कहा – 'ये आपके लिखे हुए पत्र डाकखाने में डाल आयेगा। ऑफिस की झाड़ू लगायेगा, आपको पानी पिलायेगा।'

इस पर ऑफीसर बोला – 'हम तो गांधीजी के शिष्य हैं, एक ग्लास पानी के लिए किसी आदमी की जरूरत पड़े – यह अच्छी बात नहीं है। सामने ही तो डाकघर है, हम डाकघर में पत्र डाल देंगे। छोटा सा तो कमरा है, इसकी झाड़ू लगाने के लिए किसी आदमी को रखने की क्या आवश्यकता है ? मैं स्वयं ही झाड़ू लगा लिया करूँगा। हम तो स्वयंसेवक हैं।'

यह सुनकर कम्पनीवालों ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा – 'हमने ऑफीसर पद के लिए गलत व्यक्ति को चुन लिया है, 'आप चपरासी ही रहना, हमें ऑफीसर तो ऐसा चाहिए जो अपने हाथ से एक गिलास पानी भी उठाकर नहीं पी सके। गांधीजी के चेले हो तो स्वराज का आंदोलन करो। हमारा ऑफिस तुमसे चलनेवाला नहीं है।'

ऐसी ही अवस्था हमारे आत्मा की है। हम ही ज्ञाता-द्रष्टा और हम ही कर्त्ता-धर्त्ता बनना चाहते हैं। भाई ! ज्ञाता-द्रष्टा ऑफीसर है और कर्त्ता-धर्त्ता क्लर्क है, चपरासी है। (क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

पाठशाला की स्थापना

झिलाई (जयपुर) : यहाँ पर दिनांक 4 फरवरी 2002 को श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला की स्थापना की गई। इस अवसर पर आयोजित समारोह में समाज के अध्यक्ष श्री दिनेशजी जैन ने पाठशाला के बोर्ड का अनावरण किया। मंत्री श्री प्रहलादजी जैन की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

इस प्रसंग पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय से पधारे श्री नितिनजी कोठेकर शास्त्री ने आज के इस भौतिकवादी युग में पाठशाला की अपरिहार्य आवश्यकता बताई एवं छहढाला की कक्षा चलाई। इसके साथ साप्ताहिक पाठशाला, प्रौढ़कक्षा एवं प्रवचन प्रारंभ किये गये।

पुरस्कार वितरण समारोह सानन्द सम्पन्न

फिरोजाबाद : यह ाँ दिनांक 27 जनवरी 2002 को आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति द्वारा प्रकाशित आचार्य कुन्दकुन्द ज्ञान प्रश्नपत्र का पुरस्कार वितरण समारोह श्री प्रेमचन्दजी जैन रपरिया की अध्यक्षता एवं श्री कश्मीरचन्दजी जैन व श्री रमेशचन्दजी जैन बैरिस्टर के मुख्यातिथ्य में सानन्द सम्पन्न हुआ। मुख्यवक्ता श्री अशोककुमारजी जैन सिरसागंज थे।

प्रात: पूजन के पश्चात् पण्डित अशोककुमारजी के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। पुरस्कारों में बम्पर पुरस्कार श्री राजीवजी भोगांव को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार तथा 10 विशेष सांत्वना, 10 लघु सांत्वना एवं 120 सांत्वना पुरस्कार भी वितरित किये गये। इसी प्रसंग पर अहिंसा महावीर की दृष्टि में विषयक निबन्ध में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया।

शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

सुसनेर (शाजापुर) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर में श्री दिगम्बर जैन तत्त्वज्ञान प्रचार ट्रस्ट द्वारा 27 जनवरी से 31 जनवरी तक एक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित श्री जगदीशचन्दजी पंवार द्वारा बच्चों की पाठशाला चलाई गई।

इसके साथ ही आपके समयसार की गाथा 45 से 47 पर हुये मार्मिक प्रवचनों का भी धर्मलाभ प्राप्त हुआ। दोपहर में हुई तत्त्वचर्चा में साधर्मी भाई-बहिनों ने भाग लिया। **- केशरी सिंह पाण्डे**

पाठकों के पत्र

जबलपुर से पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन ब्र. यशपालजी जयपुर को लिखते हैं कि -'अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक सूचित कर रहा हूँ कि क्षत्रचूड़ामणि ग्रन्थ का वाचन स्वान्त:सुखाय आज पूरा हुआ। पढ़कर बहुत ही प्रसन्नता हुई। वस्तुस्वरूप का दिग्दर्शन प्रथमानुयोग में भी बहुत सुन्दर तरीके से आपने विशेषार्थ में किया है। बहुत शान्ति मिली। तत्त्वदर्शन के साथ-साथ आपका भावी-भगवानपना आँखों में झूलता रहा। ब्र.हरीभाई और पण्डित सदासुखदासजी की आध्यात्मिक छटा को परोसने का कार्य आपने बखूबी निभाया है; एतदर्थ आपको कोटिश: साधुवाद, धन्यवाद !'

वैराग्य समाचार

1. सागर निवासी पूर्व सांसद सेठ श्री डालचन्दजी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती सुधारानी जैन का 22 जनवरी 2002 को इन्दौर में अकस्मात् निधन हो गया है। श्रीमती सुधारानीजी बचपन से ही समाजसुधार की विभिन्न गतिविधियों में संलग्न रही एवं धार्मिक लगाव उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

2. नागपुर निवासी श्री कोमलचन्दजी सागरवालों का 17 जनवरी 2002 को देहावसान हो गया है। आप घर में रहकर वैराग्यमय जीवन जीनेवाले सरलस्वभावी, जिनधर्म के गाढ़ श्रद्धानी एवं स्वामीजी के प्रति अनन्य आस्था रखनेवाले थे। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 101 रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

3. श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, मन्दसौर के अध्यक्ष श्री रिखबचन्दजी चपरोद का दिनांक 17 जनवरी 2002 को आकस्मिक निधन हो गया है। आप समर्पित समाजसेवी, धर्मात्मा एवं कर्मठ व्यक्तित्त्व के धनी थे। आपके स्मरणार्थ मुमुक्षु मण्डल में एक शोकसभा रखी गई, जिसमें आपको श्रद्धांजली दी गई।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही कामना है।

नोट करें

श्री मनोज जैन, मुजफ्फरनगर के फोन नं. अब निम्नप्रकार हो गये हैं -
(0131) 661749, 661815

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

जयपुर	- 23 मार्च से 24 मार्च 2002	सेमिनार (विश्वविद्यालय)
दिल्ली	- 25 मार्च से 28 मार्च 2002	विधान - आत्मार्थी ट्रस्ट
कलकत्ता	- 30 मार्च से 6 अप्रैल 2002	सिद्धचक्र विधान
खतौली	- 20 से 22 अप्रैल 2002	महावीरजयन्ती
दिल्ली (सरोजनी नगर)	- 23 से 24 अप्रैल 2002	पंचकल्याणक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **फरवरी (द्वितीय) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर